महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के चतुर्थ दीक्षांत समारोह में भाषण

स्थान :- चित्रकूट दिनांक:- 18 जनवरी, 2012 समय :- पूर्वान्ह 11 बजे

मुझे प्रसन्नता है कि आज इस विश्वविद्यालय का चौथा दीक्षांत पर्व मनाया जा रहा है। यह विश्वविद्यालय महान चिन्तक श्रद्धेय नानाजी देशमुख की अनुपम कृति है। इसलिए इस विश्वविद्यालय से देश और समाज की अपेक्षायें भी भिन्न और व्यापक हैं। विश्वविद्यालय के साथ महात्मा गांधी का नाम जुड़ा है। भारत में गांधी जी और ग्रामीण विकास एक-दूसरे के पूरक ही हैं। इसलिए इस विश्वविद्यालय से यह भी अपेक्षा है कि परम्परागत शिक्षण-प्रशिक्षण के साथ ऐसे काम भी करें जिससे हमारे गावों का विकास हो और गांवों में रहने वाले आदमी की दु:ख-तकलीफ दूर हो। विकास का लाभ शिक्षा के माध्यम से अन्तिम व्यक्ति तक पहुंचे। मैं पूरे विश्वविद्यालय परिवार को दीक्षांत समारोह के अवसर पर और नये साल के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। आप सबका नाम हो। विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा बढ़े और हम अपने मकसद में कामयाब हों।

अनेक वर्षों से चित्रकूट आने का मन था। कई बार कार्यक्रम बने, पर आ न सका। आज मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है कि चित्रकूट जैसे पावन तीर्थ के इस विश्वविद्यालय में आप सबसे मिलना हो रहा है। आज हम जिन समस्याओं को देखते हैं, उनके मूल में कहीं न कहीं शिक्षा का अभाव है। यदि देश के सारे नागरिक सुशिक्षित हों तो बहुत सी समस्याओं का समाधान हो जायेगा। शिक्षा जीवन को जीने का एक विशिष्ट ढंग देती है। मुझे विश्वास है कि इस विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त करने वाले हमारे युवक अपनी शिक्षा का उपयोग समाज की भलाई के लिए करेंगे।

आज हम जिस शिक्षा प्रणाली से अध्ययन कर रहे हैं, उसमें मूल्यों, उत्तरदायित्वों और संवेदनशीलता के लिए बहुत सीमित स्थान है। शिक्षा केवल किताबी पढ़ाई तक सिमट कर रह गई है। उससे व्यक्तित्व नहीं बन रहा है। समाज नहीं सुधर रहा है। नानाजी ने इस

विश्वविद्यालय में ऐसी पढ़ाई का सपना देखा था, जिससे नवयुवकों में शिक्षा और संस्कार दोनों बढ़ें। पढ़-लिखकर वे दूसरों का दु:ख दर्द भी समझ सकें। तभी सही मायने में हम ग्रामोदय को सार्थक करेंगे।

आजादी के बाद के छ: दशकों में उच्च शिक्षा में अवसर बढ़े हैं। विविधता भी बढ़ी है। लेकिन गुणवत्ता और राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता ये दोनों ऐसे क्षेत्र हैं जिसमें अभी बहुत काम करना शेष है। इस क्षेत्र में ग्रामोदय जैसे विश्वविद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। शिक्षा का महत्वपूर्ण आयाम शोध है। हमारे प्राचीन सांस्कृतिक वैभव का आधार हमारा शोध ही था। शोध ने ही हमें दूर-दृष्टि दी और विश्व-गुरू बनाया। प्राचीनकाल से चित्रकूट जैसे आध्यात्मिक केन्द्रों में गुरूजनों के समर्थ मार्गदर्शन में निरन्तर शोध कार्य होता रहा है। उस गौरव का अनुभव कर हमें इस दिशा में आगे बढ़ना है। विज्ञान में मौलिक शोध लुप्त हो रहे हैं। अन्य विषयों में भी सत्य को खोजने के बजाय डिग्री को पाना शेष उपाधियों का लक्ष्य हो गया है। मुझे ज्ञात हुआ है कि इस विश्वविद्यालय ने शोध की गुणवत्ता के लिए जो मानक निर्धारित किये हैं,उसे यूजीसी ने भी अपनाया है। यह अच्छी बात है कि विश्वविद्यालय में पुस्तकालयीन महत्व के ही नहीं, बल्कि गांव की समस्याओं के निदान को केन्द्र में रखकर शोध होंगे, जो समाज के लिए भी उपयोगी होंगे और अध्येता के लिए भी।

इस विश्वविद्यालय ने अनेक नूतन परिपाटियाँ प्रारम्भ और परिष्कृत की है। बिना किसी व्यवधान के पूरे वर्ष अच्छी पढ़ाई, समय पर परीक्षा-फल और पढ़ने-लिखने का अच्छा वातावरण दूर-दूर से छात्रों को यहां आने के लिए आकर्षित करता है। व्यक्तित्व विकास और मूल्यों के संवर्धन के लिए सामाजिक उत्तरदायित्व के पाठ¬क्रम का सफलता-पूर्वक संचालन आपकी दृढ़ इच्छा शक्ति को दर्शाता है।

प्रिय विद्यार्थियों, आपने इस विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की और आज आप उपाधि प्राप्त कर रहे हैं। समाज में जाकर आपको ऐसा आचरण करना है जिससे आपके विश्वविद्यालय और आपके गुरूजनों को सदा प्रतिष्ठा मिले। मुझे विश्वास है कि आपकी यह शिक्षा केवल भौतिक उपलब्धियों तक सीमित न रहकर समाज परिवर्तन का आधार बनेगी। प्रत्येक छात्र से मेरी यही अपेक्षा होगी कि वह अपनी प्राथमिकताओं में एक कृषक की पीड़ा, एक श्रमिक के अभाव और एक ग्रामीण में शहरी उपेक्षा से उपज रही कुंठा और हताशा को ध्यान में रखेगा और अपनी

शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार उनके निदान के लिए प्रयत्नशील रहेगा। गांव की तरक्की राष्ट्र की तरक्की है। गांव की खुशहाली के बगैर विकास की बड़ी से बड़ी उपलब्धियाँ भी औचित्यहीन ही रहेंगी। मुझे विश्वास है कि दीक्षा- पर्व में आप सभी इसी शुभ-संकल्प के साथ सामाजिक जीवन में प्रवेश करेंगे।

जय हिन्द।